न्यूज़ नेशन में दस साल काम करने के बाद इस्तीफ़ा देने वाले पत्रकार अनिल यादव ने चैनल और यूपी सरकार पर लगाए गम्भीर आरोप

न्यूज़ नेशन को 2012 में ज्वाइन किया था.लगभग 10 साल हो गए 2014-15 में रिपोर्टिंग करने लखनऊ आया था.. 2017 तक तो चैनल ठीक-ठाक चलता रहा जब तक सूबे में गैर भाजपा सरकार थी...

तब तक तो चैनल थोड़ी-बहुत पत्रकारिता करता था, और सरकार की गलत नीतियों अपराध भ्रष्टाचार सब की खबरें दिखाता था.

लेकिन 2017 के बाद .P. में जैसे ही सरकार बदली बीजेपी की सरकार आई चैनल ने अपनी रीढ़ की हड्डी मानो निकाल कर रख दी और केंचुए का रूप धारण कर लिया.

सभी रिपोर्टर पर प्रतिबंध लगा दिया गया कि वह सरकार की किसी पॉलिसी के खिलाफ नहीं बोलेंगे.

प्रदेश में अगर कहीं क्राइम की खबर हो रही है, अपराध की खबर हो रही है तो उस पर न तो कहीं बोलेंगे न टिप्पणी करेंगे न सोशल मीडिया में कुछ लिखेंगे, और चैनल पर भी लाइव रिपोर्टिंग के दौरान सरकार के खिलाफ एक शब्द नहीं बोलना है, बल्कि सभी चीजों के लिए विपक्षी दलों चाहे वह बीएसपी हो कांग्रेस हो या समाजवादी पार्टी हो उसे ही जिम्मेदार ठहराना है.

रेवेन्यू के लिए न्यूज़ नेशन मानो सरकार के सामने बिछ गया हो.

चैनल का एक ही एजेंडा रह गया, सुबह हिंदू मुसलमान से शुरू करना और रात में हिंदू मुसलमान से ही खत्म करना...

रिपोर्टर्स को बोला जाने लगा, दबाव दिया जाने लगा कि मुस्लिम से रिलेटेड स्ह्लश्रह4 लाओ. मुस्लिम से जुड़ी कंट्रोवर्सी ढूंढो, मुसलमानों को उकसाओ, उनसे विवादित बयान दिलवाओ.

मदरसों में जाओ, मस्जिदों में जाओ कहीं से कुछ निकालकर लाओ, मुस्लिम सेलिब्रिटी हैं, बड़े स्कॉलर हैं, शायर हैं, उनसे विवादित बयान दिलवाने का दबाव बनाया जाने लगा.

बस रात दिन एक ही फितूर हिंदू मुसलमान हिंदू मुसलमान हिंदू मुसलमान. राज्य और केंद्र सरकार की सभी गलत पॉलिसियों को बढ़ा चढ़ा कर पेश करना, मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री की दलाली करना और विपक्षी दलों को नेताओं को बदनाम करना, यही अब न्यूज़ नेशन का एजेंडा रह गया है.

कुल मिलाकर न्यूज़ नेशन ने अपने पत्रकारों को पत्रकारिता की जगह भांडगिरी पर लगा रखा है.

इस चैनल से विदा लेने की तो बहुत पहले सोच रहा था, लेकिन कुछ मजबूरियां थी जिन्होंने हाथ पैर बांध रखे थे लेकिन एनफ इज एनफ. इस चैनल के साथ अब ज्यादा बने रहने का मतलब है कि अपने जमीर को मारना और जमीर मर गया तो व्यक्ति जीते जी मर जाता है. चैनल में अभी भी बहुत से अच्छे पत्रकार हैं और वो पत्रकारिता करना चाहते हैं लेकिन मजबूरी में वह नौकरी कर रहे हैं ना की पत्रकारिता.

चैनल में पत्रकारों को ना तो अपने मन से कुछ सोचने की, ना बोलने की, न लिखने की, न कहने की आजादी है. यहां तक कि सोशल मीडिया पर भी वह एक लफ्ज़ नहीं लिख सकते हैं.

न्यूज़ नेशन अब पूरी तरह से लखनऊ स्थित मुख्यमंत्री कार्यालय से संचालित होता है. वहीं से उसका एजेंडा तय होता है. वहीं से उसका कंटेंट तय होता है और अगर किसी रिपोर्टर ने अपने मन से कुछ कह दिया लिख दिया बोल दिया या कोई वीडियो बना दिया जिसमें समाज की कोई हकीकत हो सच्चाई हो या किसी मजलूम का उल्लेख हो तो पंचम तल से निर्देश जाता है और उसके बाद चैनल के संपादक सक्रिय हो जाते हैं, सरकार को ही विश्वास दिलाने के लिए कि हम आपकी गुलामी में अभी तत्पर हैं.

रिपोर्टर को धमकाते हैं कि तुमने सरकार की शान में कैसे गुस्ताखी कर दी.

कल मैंने एक वीडियो बनाया जिसमें गोंडा से आया हुआ एक 14 साल का बच्चा जिसके भाई की हत्या कर दी गई, वह इंसाफ के लिए गली-गली भटक रहा है, उसकी कोई सुनने वाला नहीं है.

यह वीडियो पंचम तल पर बैठे हाकिमों को इतना बुरा लगा कि उन्होंने चैनल में शिकायत की और चैनल एक बार फिर से सरकार की दलाली में उतर पड़ा और उल्टे मुझे डराने और धमकाने लगा.

डर डर कर कई साल नौकरी कर ली लेकिन अब इस डर को मैं अपने अंदर से निकालता हूं और आपकी नौकरी आपको वापस करता हूं.

आप लोग जनता के सरोकार को छोड़कर जनता के मुद्दों को छोड़कर सरकार की ढपली बजाइए. शायद सरकार आपको इस साल रेवेन्यू में कुछ और इजाफा कर दे.

और अंत में चैनल के संपादकों को मैं चंपादक कहना पसंद करूंगा, क्योंकि संपादक बहुत बड़ा शब्द है और आप लोग चंपादक कहे जाने के लायक हो.

धन्यवाद

अनिल यादव, न्यूज नेशन, लखनउ

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की हत्या पर विनोबा की वेदना

30 जनवरी, 1948 को महात्मा गांधी की कायरतापूर्ण हत्या होने के बाद उनके बेहद करीबी सहयोगी और संत विनोबा भावे बेहद दुखी ही नहीं, 'लज्जित' भी थे. लेकिन क्यों? बापू की हत्या से जुड़ी वह क्या बात थी, जिसे सोचकर विनोबा जैसे संत को 'लज्जा' का एहसास होता था? इसका खुलासा विनोबा भावे ने खुद ही किया है. वह भी बापू की हत्या के सिर्फ एक महीने बाद, सेवाग्राम में सर्वोदय समाज के स्थापना सम्मेलन में ।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद, पंडित की अध्यक्षता में हुए इस सम्मेलन में जवाहरलाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आजाद, जयप्रकाश नारायण और जेबी कृपलानी जैसे बड़े नेताओं के अलावा काका कालेलकर, शंकरराव देव, जे सी कुमारप्पा, ठक्कर बापा और संत तुकड़ो जी महाराज जैसे गांधीवादी विचारक और समाजसेवी भी शामिल थे।

बापू की हत्या पर क्षोभ व्यक्त करते हुए विनोबा ने कहा-

"मैं उस प्रांत का हूं जिसमें आर. एस . एस .का जन्म हुआ. जाति छोड़कर बैठा हूं. फिर भी भूल नहीं सकता कि उसकी जाति का हूं जिसके द्वारा यह घटना हुई. कुमारप्पा जी और कृपलानी जी ने फौजी बंदोबस्त के खिलाफ परसों सख्त बातें कहीं. मैं चुप बैठा रहा. वे दुख के साथ बोलते थे. मैं दुख के साथ चुप था. न बोलनेवाले का दुख जाहिर नहीं होता. मैं इसलिए नहीं बोला कि मुझे दुख के साथ लज्जा भी थी. पवनार में मैं बरसों से रह रहा हूं. वहां पर भी चार-पांच आदमियों को गिरफ्तार किया गया है. बापू की हत्या से किसी न किसी तरह का संबंध होने का उन पर शुबहा है. वर्धा में गिरफ्तारियां हुईं, नागपुर में हुईं, जगह-जगह हो रही हैं. यह संगठन इतने बड़े पैमाने पर बड़ी कुशलता के साथ फैलाया गया है. इसके मूल बहुत गहरे पहुंच चुके हैं. यह संगठन ठीक फासिस्ट ढंग का है. ....इस संगठनवाले दूसरों को विश्वास में नहीं लेते. गांधीजी का नियम सत्य का था. मालूम होता है,

इनका नियम असत्य का होना चाहिए. यह असत्य उनकी टेक्नीक - उनके तंत्र - और उनकी फिलॉसफी का हिस्सा है." "एक धार्मिक अखबार में मैंने उनके गुरुजी का एक लेख या भाषण पढ़ा. उसमें लिखा था कि "हिंदू धर्म का उत्तम आदर्श अर्जुन है, उसे अपने गुरुजनों के लिए आदर और प्रेम था, उसने गुरुजनों को प्रणाम किया और उनकी हत्या की. इस प्रकार की हत्या जो कर सकता है, वह स्थितप्रज्ञ है." वे लोग गीता के मुझसे कम उपासक नहीं हैं. वे गीता उतनी ही श्रद्धा से रोज पढ़ते होंगे, जितनी श्रद्धा मेरे मन में है. मनुष्य यदि पूज्य गुरुजनों की हत्या कर सके तो वह स्थितप्रज्ञ होता है, यह उनकी गीता का तात्पर्य है. बेचारी गीता का इस प्रकार उपयोग होता है. मतलब यह कि यह सिर्फ दंगा फसाद करनेवाले उपद्रवियों की जमात नहीं है. यह फिलॉसफरों की जमात है. उनका एक तत्वज्ञान है और उसके अनुसार निश्चय के साथ वे काम करते हैं. धर्मग्रंथों के अर्थ करने की भी उनकी अपनी एक खास पद्धति है ।"

"राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की और हमारी कार्यप्रणाली में हमेशा विरोध रहा है. जब हम जेल में जाते थे, वो वक्त उनकी नीति फौज और पुलिस में दाखिल होने की थी. जहां हिंदू-मुसलमानों का झगड़ा खड़ा होने की संभावना होती, वहां वे पहुंच जाते. उस वक्त की (अंग्रेज) सरकार इन सब बातों को अपने फायदे का समझती थी. इसलिए उसने भी उनको उत्तेजन दिया. नतीजा हमको भुगतना पड़ रहा है."

"आज की परिस्थिति में मुख्य जिम्मेदारी मेरी है, महाराष्ट्र के लोगों की हैज..आप मुझे सूचना करें, मैं अपना दिमाग साफ रखूंगा और अपने तरीके से काम करूंगा , आर.एस.एस.से भिन्न, गहरे और दृढ़ विचार रखनेवाले सभी लोगों की मदद लूंगा. जो इस विचार पर खड़े हों कि हम सिर्फ शुद्ध साधनों से काम लेंगे, उन सबकी मदद लूंगा. हमारा साधन-शुद्धि का मोर्चा बने. उसमें सोशलिस्ट भी आ सकते हैं और दूसरे सभी आ सकते हैं. हमको ऐसे लोगों की जरूरत है, जो अपने को इंसान समझते हैं।"

जजिया-घृणित कर, क्या सचमुच ?

मनीष सिंह

जजिया, इस्लामी शासन के दौरान, हिन्दुओ पर होने वाले अत्याचार का प्रतीक है। हिन्दुओ को जिंदा रहने के लिए जजिया देना पड़ता था। जजिया लगाने वाले शासक बुरे थे, उदाहरण के लिए औरँगजेब... यह आपने अब तक जाना, और माना है। मगर इससे पहले कि इसी रटी-रटाई धारणा, और हिन्दू होने की आत्मदया के साथ मर जाएं..., इस पोस्ट को पढ़ लेना जरूरी है।

कोई भी शासन प्रणाली टैक्स आधारित होती है। भू भाटक, पथकर और चुंगी भारत के टैक्स सिस्टम मे मौर्य युग से चले आ रहे थे। जयचंद और पृथ्वीराज के झगड़े में गौरी का फायदा हुआ, वो लड़ाई जीत गया। अपने लोगो को गवर्नर बनाकर चला गया।

आगे का दौर दिल्ली सल्तनत का काल है। उन लोगो ने आगे भारत का शासन अपने सिस्टम से चलाया। पांच किस्म के टैक्स आए थे- खिराज, खिज्र, खम्स, जकात और जजिया पहले दो टैक्स किसान और व्यापारी देते थे। जीएसटी समझ लीजिए, सब पर लागू था। खम्स- लूट का माल था। लूटपाट स्टेंडर्ड प्रेक्टिस थी। छोटे छोटे राज्य थे, सेना पर्मानेंट, सैलरीड नही थी। आप किसान भी थे, सुल्तान की कॉल आने पर अपना भाला उठाकर लड़ने भी जाते थे। तो लड़ने के दौरान भत्ते मिलते, और लूटपाट में हिस्सा भी। बाकायदा सिस्टम था। लूट में 80 प्रतिशत आपका (सेना का), 20 प्रतिशत राजा (राजकोष) का। यह 20 प्रतिशत ही खम्स था। यह मत सोचिये की लूटपाट के केवल मुस्लिम राजा करते थे। इंद्र द्वारा अनार्यों को गायें और धन लूटकर लाने के किस्से ऋग्वेद में हैं।मराठे तो बेसिकली लूट की आदत से ही अलोकप्रिय रहे, और तीसरे पानीपत में उनको दूसरे भारतीयों का साथ याने एलायंस नही मिला। तो अच्छा बुरा जज मत करें। बल्कि मुस्लिम शासकों में अच्छी बात यह थी, की लूट की बंदरबाट नही होती थी, कम से कम उंसके बंटवारे का एक सिस्टम था।

बचा जकात और जजिया। ये धार्मिक कर थे।

जकात मुसलमान देते। सरकार जकात का पैसा, मस्जिद बनाने, इमामों की तनख्वाहें, मदरसे आदि चलाने में लगाती। यह पैसा सरकार टैक्स के रूप में वसूलती, धार्मिक पर्पज में लगाती। यह शायद संपत्ति का 2.5 प्रतिशत था। जजिया का पैसा गैर मुस्लिम देते। जजिया की दर, जनता की फाइनांशियल हालत के आधार पर तय होती। समय समय पर बदलती रहती। एक दौर में यह 48-24-12 दिहरम था। याने धनवान 48 दिहरम, कम धनवान 24 दिहरम, साधारण लोग 12 दिहरम, वार्षिक देते। आयविहीन, अपंग, औरत, बच्चे, पुरोहित याने की ब्राम्हण जजिया से एग्जेम्प्टेड थे (पॉइंट टू बी नोटेड)

जजिया क्यों देते थे??

इसलिए कि हिंदू को युद्ध के समय लड़ने के लिए सुल्तान की कॉल नही आती थी। इसलिए कि सुल्तान बाबू, जब लड़ते, तो अमूमन लोकल राजाओं के विरुद्ध ही लड़ते, जो हिंदू थे। तो अपनी फ़ौज में वे हिंदू कैसे रखते।

यह एक तरह से सुल्तान की, याने देश की सेवा में कमी थी, जजिया से वह कम्पसेट होता था। जजिया देकर, आपको सुल्तान की सेना में जाकर जान जोखिम में डालने, और पड़ोसी हिंदू राजा से लडने के धर्मसंकट से मुक्ति मिल जाती थी। दोनों पक्षो के लिए एक कनवेनिएंट अरेंजमेंट था। एक धारणा है कि जजिया से बचने के लिए लोग कन्वर्ट हो गए, मुसलमान बन गए। गलत है, मुसलमान बनने के कारण कुछ भी रहे हो, टैक्स नही हो सकता। जजिया सस्ता था, जकात महंगा पड़ता। ऐसे मे कोई टैक्स बचाने के लिए धर्म बदलकर मुस्लिम बन गया, तो उल्टे नुकसान मे रहता। जजिया, लेकिन अलग ही प्रोपगंडा का शिकार होता गया, आज ही नही, तब भी। इसे गैर मुस्लिम पर अत्याचार के रूप मे देखा जाने लगा तो अकबर ने जजिया हटा लिया । यह उसकी लोकप्रियता का बड़ा कारण था। मगर यह भी नोटिस किया जाए, की तब हिन्दू बढ़चढ़कर सल्तनत के लिए सेना में भर्ती होकर लड़ने भी लगे थे। अगर सुल्तान का आप पर फेथ है, तो आप सेना जॉइन कर सकते थे, और वैसे भी जजिया एग्जेम्प्ट हो जाता है।

धर्म आधारित टैक्स, आज मॉर्डन युग मे गलत माने जाते है। जजिया बन्द हो गया है, मगर जकात कई देशों में लागू है। लोग खुशी से देते हैं। भारत मे बहुत से मुसलमान, आज भी कमाई में जकात अलग कर देते हैं, गरीबो में, या धार्मिक पर्पज में दान कर देते है।

इधर गुजरात रेजिमेंट नही है, मगर वहां से कोई जजिया नही देता। (सॉरी, रॉन्ग कमेंट)

तो इतिहास में किसी भी चीज को टोटेलिटी में जानिए, समझिये। बिट्स एंड पीसेज में सुनी सुनाई बातों में धारणा मत बनाइये। इसलिए कि इस टुकड़े टुकड़े सोच से, इतिहास तो बनने बदलने वाला नही ... इ सब तूचियापे मे हमारा भविष्य जरूर बिगड़ता दिखाई दे रहा है